मधुबन ओम् शान्ति अंक 271 फरवरी 2015

ज्योति बिन्दु स्वरूप

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(15-01-15)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा बापदादा वा सर्व की ब्लैसिंग लेने वाले, अव्यक्त स्थिति के अनुभवों में समाई हुई सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के तीव्र पुरुषार्थी भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ आज विशेष त्रिमूर्ति शिव जयन्ती की सबको बहुत-बहुत हार्दिक बधाईयां।

बाद समाचार – अभी हम सबके प्यारे शिव भोलानाथ बाबा के अवतरण की अलौकिक जयन्ती का दिन नजदीक आ रहा है, वर्तमान साकार मुरलियों में रोज़ बाबा शिव जयन्ती को धूमधाम से मनाने की प्रेरणायें दे रहे हैं। मुरली पढ़ते आप सबकी विशेष याद आई, वैसे तो भारत के सभी सेवास्थानों पर हर वर्ष शिव जयन्ती निमित्त खूब सेवायें होती हैं। प्रभातफेरियां निकालते, शिव मन्दिरों में प्रदर्शनियां करते, सर्व धर्म सम्मेलन आदि भी करते, हर एक अपने-अपने घरों में शिवबाबा का ध्वज फहराकर सबको बाबा का पैगाम देते साथ-साथ अपने परिवर्तन की प्रतिज्ञायें भी करते। वैसे इस वर्ष भी सभी इस महा शिवरात्रि पर्व को खूब धूमधाम से मनायेंगे ही। ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, सुख शान्ति के दाता परमप्यारे शिव भोलानाथ बाबा की अपरमअपार महिमा हम सब बच्चे तो जानते ही हैं। कैसे ब्रह्मा बाबा के मुख कंवल से निराकार परमपिता परमात्मा गीता का सत्य ज्ञान सुनाकर मनुष्य से देवता, नर से श्रीनारायण, नारी से श्रीलक्ष्मी बना रहे हैं। अब यही सन्देश जन-जन के कानों में पहुंच जाए ताकि हर एक गति-सद्गति (मुक्ति-जीवनमुक्ति) का वर्सा जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में ले सके, इसके लिए जरूर आप सब प्लैनिंग कर रहे होंगे! भल शिवबाबा खुद पुनर्जन्म में नहीं आता, परन्तु 84 जन्मों का ज्ञान कितना वन्डरफुल रीति से देता है। मनमनाभव और मध्याजीभव, मनमनाभव कहने से बुद्धि ऊपर चली जाती है, फिर मध्याजीभव कहने से सारा चक्र बुद्धि में आ जाता है। तो इस बार और भी उमंग-उत्साह के साथ सभी शिव जयन्ती को इतना धूमधाम से मनाओ जो सबके दिल तक बाबा के अवतरण का शुभ समाचार पहुँच जाए।

संगमयुग पर सेवा भी भाग्य है। तन-मन-धन सफल करने का यह गोल्डन चांस है। सदा यही स्लोगन याद रहे - ''अब नहीं तो कब नहीं''। जैसे मीठे बाबा की हर रोज़ की मुरली में कितने सुन्दर वरदान और स्लोगन आते हैं। उस पर मनन चिंतन करते रहो तो और कोई बातें बुद्धि में आ नहीं सकती। कल भी मीठे बाबा ने कहा तुम हो सदा सुहागिन, तुम्हारे मस्तक पर अविनाशी तिलक लगा हुआ है, मर्यादाओं का कंगन पहना हुआ है, दिव्य गुण ही तुम्हारा श्रृंगार हैं, साथ-साथ तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क . सबमें भाग्य भी कितना श्रेष्ठ है। तो बोलो, सदा यही नशा और खुशी रहती है ना!

बाकी इस बार शरीर की चेकिंग निमित्त एक सप्ताह के लिए अहमदाबाद लोटस हाउस जाना हुआ। सभी डॉक्टर्स ने चेकिंग की, सब कुछ ठीक है। डाक्टर्स ने भी महसूस किया कि यह कौन है और किसकी है! यह भी किसी बहाने सबको बाबा का परिचय मिल जाता है।

बाकी जनवरी मास में तो आप सभी ने बहुत अच्छी योग तपस्या की है, कई स्थानों पर 108 घण्टे की अखण्ड भट्ठियां भी चली हैं। सभी ने बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव किये, शक्तिशाली वायुमण्डल बनाया।

ऐसे ही इस पूरे वर्ष में सेवाओं के साथ-साथ तपस्या भी करते रहेंगे तो बाबा की प्रत्यक्षता सहज हो जायेगी।

अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

तपस्या वर्ष के लिए – होमवर्क - फरवरी 2015

(A) आत्मिक स्थिति के अभ्यास द्वारा शान्ति और शुभ भावना सम्पन्न बनो

1) अनेक प्रकार के व्यक्ति, वैभव अथवा अनेक प्रकार की वस्तुओं के सम्पर्क में आते आत्मिक भाव और अनासक्त भाव धारण करो। यह वैभव और वस्तुयें अनासक्त के आगे दासी के रूप में होंगी और आसक्त भाव वाले के आगे चुम्बक की तरह फंसाने वाली होंगी।

2) अब ऐसे ट्रान्सपेरेंट (पारदर्शी) हो जाओ जो आपके शरीर के अन्दर आत्मा विराजमान है, वह स्पष्ट सभी को दिखाई दे। आपका आत्मिक स्वरूप उन्हों को अपने आत्मिक स्वरूप का साक्षात्कार कराये, इसको ही कहते हैं अव्यक्त वा आत्मिक स्थिति का अनुभव कराना।

3) जब स्वयं को अकालमूर्त आत्मा समझेंगे तब अकाले मृत्यु से, अकाल से, सर्व समस्याओं से बच सकेंगे। मानसिक चिन्तायें, मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन है – अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना। देह-अभिमान को मिटाने से सर्व परिस्थितियाँ मिट जायेंगी।

4) जैसे यह देह स्पष्ट दिखाई देती है वैसे अपनी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे अर्थात् अनुभव में आये। मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये। ऐसे निरन्तर तपस्वी बनो तब हर आत्मा के प्रति कल्याण का शुभ संकल्प उत्पन्न होगा।

5) जैसे अनेक जन्म अपने देह के स्वरूप की स्मृति नेचुरल रही है वैसे ही अपने असली स्वरूप की स्मृति का अनुभव थोड़ा समय भी नहीं करेंगे क्या? यह पहला पाठ कम्पलीट करो तब अपनी आत्म-अभिमानी स्थिति द्वारा सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे।

6) किसी कमजोर आत्मा की कमजोरी को न देखो। यह स्मृति में रहे कि वैराइटी आत्मायें हैं। सबके प्रति आत्मिक दृष्टि रहे। आत्मा के रूप में उनको स्मृति में लाने से पॉवर दे सकेंगे। आत्मा बोल रही है, आत्मा के यह संस्कार हैं, यह पाठ पक्का करो तो सबके प्रति स्वत: शुभ भावना रहेगी।

7) आत्मा शब्द स्मृति में आने से ही रुहानियत के साथ शुभ-भावना भी आ जाती है। पवित्र दृष्टि हो जाती है। चाहे भल कोई गाली भी दे रहा हो लेकिन यह स्मृति रहे कि यह आत्मा तमोगुणी पार्ट बजा रही है तो उससे नफ़रत नहीं करेंगे, उसके प्रति भी शुभ भावना बनी रहेगी।

8) जैसे कोई भी व्यक्ति दर्पण के सामने खड़ा होते ही स्वयं का साक्षात्कार कर लेता है, वैसे आपकी आत्मिक स्थिति, शक्ति रुपी दर्पण के आगे कोई भी आत्मा आवे तो वह एक सेकेण्ड में स्व स्वरुप का दर्शन वा साक्षात्कार कर ले। आपके हर कर्म में, हर चलन में रुहानियत की अट्रैक्शन हो। जो स्वच्छ, आत्मिक बल वाली आत्मायें हैं वह सबको अपनी ओर आकर्षित जरूर करती हैं।

9) जैसे एटम बम एक स्थान पर छोड़ने से चारों ओर उसके अंश फैल जाते हैं–वह एटम बम है और यह आत्मिक बम है। इसका प्रभाव अनेक आत्माओं को आकर्षित करेगा और सहज ही प्रजा की वृद्धि हो जायेगी इसलिए संगठित रूप में आत्मिक स्वरूप के अभ्यास को बढ़ाओ, स्मृति-स्वरुप बनो तो वायुमण्डल पॉवरफुल हो जायेगा।

10) ऐसा कोई भी ब्राह्मण नहीं होगा जो आत्म-अभिमानी बनने का पुरुषार्थी न हो। लेकिन निरन्तर आत्म-अभिमानी, जिससे कर्मेन्द्रियों के ऊपर सम्पूर्ण विजय हो जाए, हरेक कर्मेन्द्रिय सतोप्रधान स्वच्छ हो जाए, देह के पुराने संस्कार और सम्बन्ध से सम्पूर्ण मरजीवा हो जाए, इस पुरुषार्थ से ही नम्बर बनते हैं।

11) किसी भी विघ्न से मुक्त होने की युक्ति है - सेकण्ड में स्वयं का स्वरूप अर्थात् आत्मिक ज्योति स्वरूप स्मृति में आ जाए और कर्म में निमित्त भाव का स्वरूप–इस डबल लाइट स्वरूप में स्थित हो जाओ तो सेकण्ड में हाई जम्प दे देंगे। कोई भी विघ्न आगे बढ़ने में रूकावट नहीं डाल सकेगा।

12) याद में निरन्तर रहने का सहज साधन है - प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहना। पर-वृत्ति अर्थात् आत्मिक रूप। ऐसे आत्मिक रूप में रहने वाला सदा न्यारा और बाप का प्यारा होगा। कुछ भी करेगा लेकिन ऐसे महसूस होगा जैसे काम नहीं किया लेकिन खेल किया है। यह रूहानी नयन, यह रूहानी मूर्त ऐसे दिव्य दर्पण बन जायेंगे जिस दर्पण में हर आत्मा बिना मेहनत के आत्मिक स्वरूप ही देखेगी।

13) जैसे अन्य आत्माओं को सेवा की भावना से देखते हो, बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो। लौकिक में अलौकिक स्मृति,

सदा सेवाधारी की, ट्रस्टीपन की स्मृति, सर्व प्रति आत्मिक भाव से शुभ कल्याण की, श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना रखो। हद में नहीं आओ।

14) सदा बेहद की आत्मिक दृष्टि, भाई-भाई के सम्बन्ध की वृत्ति से किसी भी आत्मा के प्रति शुभ भावना रखने का फल जरूर प्राप्त होता है इसलिए पुरूषार्थ से थको नहीं, दिलशिकस्त भी नहीं बनो। निश्चयबुद्धि हो, मेरेपन के सम्बन्ध से न्यारे हो शान्ति और शक्ति का सहयोग आत्माओं को देते रहो।

(B) आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो

1) ब्राह्मण संगठन का आधार आत्मिक प्यार है। चलते-फिरते आत्मिक प्यार की वृत्ति, बोल, सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म हो। ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर मास्टर प्रेम का सागर है। इसी नेचर को धारण करो।

2) समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखो लेकिन लॉ में भी लव महसूस हो। इसके लिए आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो तब हर समस्या को हल करने में सहयोगी बन सकेंगे। शिक्षा के साथ सहयोग देना ही आत्मिक प्यार की मूर्ति बनना है।

3) आत्मिक स्वरूप में रहने से लौकिक में रहते भी अलौकिकता का अनुभव करेंगे। अपने को आत्मिक रूप में न्यारा समझना है। कर्तव्य से न्यारा होना तो सहज है, उससे दुनिया को प्यारे नहीं लगेंगे, दुनिया को प्यारे तब लगेंगे जब शरीर से न्यारी आत्मा रूप में कार्य करेंगे। इससे ही मन के प्रिय, प्रभु प्रिय और लोक प्रिय बनेंगे।

4) कभी कहीं पर जाओ तो यही लक्ष्य रखो कि जहाँ जायें वहाँ यादगार कायम करें, वह तब होगा जब आत्मिक प्यार की सौगात साथ होगी। यह आत्मिक प्यार (स्नेह) पत्थर को भी पानी कर देगा। इससे किसी पर भी विजय हो सकती है।

5) आत्मिक प्यार से जितना एक दो के स्नेही सहयोगी बनते हो उतना ही माया के विघ्न हटाने में भी सहयोग मिलता है। सहयोग देना अर्थात् सहयोग लेना। तो परिवार में आत्मिक स्नेह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है। यह लेन-देन का हिसाब है।

6) जैसे कपड़े सिलाई करने का साधन धागा होता है, वैसे ही भविष्य सम्बन्ध जोड़ने का साधन है आत्मिक स्नेह रुपी धागा। जोड़ने का समय और स्थान यह है। लेकिन यह ईश्वरीय स्नेह वा आत्मिक स्नेह तब जुड़ सकता है जब अनेक देहधारियों से स्वार्थ का स्नेह समाप्त हो जाता है।

7) जहाँ देखते हो, जिसको देखते हो चलते फिरते उसका आत्मिक स्वरूप ही दिखाई दे। जैसे जब किसी के नैनों में खराबी होती है तो उसे एक समय में दो चीज़े दिखाई पड़ती हैं। ऐसे यहाँ भी अगर दृष्टि पूर्ण नहीं बदली है तो देही और देह दो चीज़ें दिखाई देंगी।

8) अभी आत्मिक स्थिति की स्मृति कभी-कभी देह के पर्दे के अन्दर छिप जाती है, इसलिए यह स्मृति भी पर्दे के अन्दर दिखाई देती है। आत्मिक स्मृति स्पष्ट और बहुत समय रहने से अपना भविष्य वर्सा अथवा अपने भविष्य के संस्कार स्वरूप में सामने आयेंगे। भविष्य संस्कारों को स्पष्ट स्मृति में लाने के लिए आत्मिक स्वरूप की स्मृति सदाकाल और स्पष्ट रहे।

9) जैसे अनेक जन्म अपने देह के स्वरूप की स्मृति नेचुरल रही है, वैसे ही अपने असली स्वरूप की स्मृति का अनुभव होना चाहिए। इस आत्म-अभिमानी स्थिति से सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे। यही स्थिति विजयी माला का दाना बना देगी।

10) आत्मा बोल रही है। आत्मा के यह संस्कार हैं.... यह पहला पाठ पक्का करो। आत्मा शब्द स्मृति में आते ही रुहानियत-शुभ भावना आ जायेगी। दृष्टि पवित्र हो जायेगी। सर्व के स्नेही, सहयोगी बन जायेंगे।

11) शरीर में होते निराकारी आत्मिक रूप में स्थित रहो तो यह साकार रूप गायब हो जायेगा। जैसे साकार बाप को देखा, व्यक्त गायब हो अव्यक्त दिखाई देता था। तो ऐसी अवस्था बनाने के लिए मन्सा में निराकारी स्टेज, वाचा में निरहंकारी और कर्म में निर्विकारी स्टेज हो। संकल्प में भी कोई विकार का अंश न हो।

12) पहला पाठ आत्मिक स्मृति का पक्का करो। आत्मा इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कर रही है। तो अन्य आत्माओं का भी कर्म देखते हुए यह स्मृति रहेगी कि यह भी आत्मा कर्म कर रही है। ऐसे अलौकिक दृष्टि, जिसको देखो आत्मा रूप में देखो। इससे हर एक कर्मेन्द्रिय सतोप्रधान स्वच्छ हो जायेगी।

13) जैसे सेकण्ड में लाइट का स्विच आन करने से अंधकार भाग जाता है, ऐसे स्वमान की स्मृति का स्विच आन करो तो भिन्न-भिन्न देह-अभिमान समाप्त करने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। सहज आत्म अभिमानी स्थिति बन जायेगी। यही स्थिति रूहानी प्यार का अनुभव करायेगी।

14) आत्मिक स्थिति में रहने से चेहरा कभी गम्भीर नहीं दिखाई देगा। गम्भीर बनना अच्छा है लेकिन टूमच गम्भीर नहीं। चेहरा सदा मुस्कराता रहे। जैसे आपके जड़ चित्रों को अगर सीरियस दिखाते हैं तो कहते हो आर्टिस्ट ठीक नहीं है। ऐसे आप अगर सीरियस रहते हो तो कहेंगे इसको जीने का आर्ट नहीं आता।

"सच्चे रहो, पक्के रहो, जरा भी फैमीलियरटी का संस्कार न हो तो फरिश्ता बन जायेंगे"

(दादी जानकी)

बाबा ने अपने संग के रंग की पिचकारियाँ हम सबको मारी हैं, हमने भी एक दो के ऊपर ऐसी पिचकारी लगाई है। ऐसे तो नहीं लगायेंगे, किसको लगायेंगे कैसे लगायेंगे? लगाने वाला खुशी से लगा रहा है, जिसको लग रही है वह भी खुश हो रहे हैं। बाबा के सामने सभा की सीन कितनी सुन्दर होती है। बाबा हमको ऐसे रंग लगा रहा है, हम खुश हो रहे हैं। खुशी नहीं होती है तो न होली होती है, न होली बनते हैं। हो ली, बात पूरी हो गई तो खुशी मनाते हैं। वो अच्छा रंग लगाते हैं, वायब्रेशन से लगाते हैं, प्रेम से लगाते हैं। अगर कोई प्रकार का भारीपन होता है तो अवाइड करते हैं। कहेंगे मेरे को यह सब अच्छा नहीं लगता है।

किसी ने प्रश्न पूछा तुम फियरलेस कैसे हो? हमारे को किसी-न-किसी का डर रहता है, उनकी भेंट में हम कितना निरवैर हैं, निर्भय हैं। बाबा की इतनी नॉलेज है तभी इतने निरवैर हैं, किसके साथ भी द्वेष भावना नहीं है। डर क्यों होता है? कभी कोई ऐसी भूल न हो जाये जो पश्चाताप करना पड़े। यह कर्म करने से यह सजा, यह कर्म करने से यह सजा...। इसलिए हम कम-से-कम इतने सच्चे रहें। हम सच्चे पक्के हैं, कोई फैमिलीयरियटी का संस्कार नहीं, किसी की निंदा नहीं करते। सच्चा बोलने में ताकत आती है, डर नहीं लगता है। जो सच्चा है वो यह सिद्ध नहीं करता कि मैं सच्चा हूँ। बाबा कहता है सच्चाई छिपेगी नहीं, कितनी भी परीक्षायें आयें लेकिन सदा ही बाबा की याद और मुरली के आधार से अच्छे कर्म करो, तो संगमयुग पर हमारे श्रेष्ठ वन्डरफुल कर्मों का यादगार यह त्योहार बने हुए हैं। हम बच्चे न होते तो बाबा की जयन्ती कौन मनाते? बाबा हमारी जयन्ती मनाता है, हम बाबा की जयन्ती मनाते हैं। हो ली हम करते हैं, तो हम होली मनाते हैं। अगर आपस में थोड़ा मिल करके न रहो तो कौन पूछेगा? मैं जो कहूँ सो यह करे, आज दिन तक ऐसे नहीं हुआ। जो यह कहे ना सो मैं करूँगी, फिर मिल करके करेंगे। यह भी एक अच्छी विधि है, मैं कहूँ सो करे नहीं होगा, जो वो चाहे ना वो करो मिल करके, करने में नो प्रॉब्लम है, कोई बात नहीं है, पर यह बात जिनको अच्छी लगती है मिल करके करना, एक दो को आगे रखना, कोई देखे तो कितना अच्छा लगेगा! ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"मूंझने, घबराने के वजाए वुद्धि को अचल अडोल वनाओ तो निरन्तर योगी वन जायेंगे"

(दादी जानकी)

सबका चेहरा मुस्करा रहा है, हमारी इस मुस्कराहट में अन्दर से यही गीत निकलता शुक्रिया बाबा आपका, कितने हम भाग्यवान हैं जो सारे संसार में हमारे जैसा कोई मुस्कराने वाला नहीं है। सदा मुस्कराने की रिहर्सल करो तो स्वप्न में भी मुस्कराते रहेंगे, इसके लिए न इधर देखो, न उधर देखो। दुनिया वालों को ऐसे मुस्कराना सहज नहीं है।

किसी भी कारण से किसी के लिए अगर द्वेष भाव आया तो जायेगा नहीं, इतना खतरनाक है। सदा ही बाबा को सामने देखो, साथ में देखो तो पूरा सच्चा योगी, रीयल योगी, सहज योगी बन जाते हैं। बाबा को साथ में देख कर्मयोगी बन जाते

हैं। अन्दर ही अन्दर स्थिर बुद्धि जब तक नहीं हैं तो अडोल अचल नहीं रहेंगे माना डोलायमानी और चलायमानी है, यह दो बातें परीक्षा के रूप में आती हैं। इसमें मूँझने, घबराने की बात नहीं है। कैसे करें, क्या करें के बजाए बाबा कहता है यह करो ऐसे करो बस, तो योग लगाना इज़ी हो जाता है। फिर नेचुरल योगी बन जाते हैं। नेचुरल योगी का सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ माता-पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू... की शक्ति से निर्भय है, निर्वैर है। ऐसी ऐसी बातों का अभ्यास करने से नेचुरल योगी...। फिर कोई नहीं कहेगा इसकी नेचर थोड़ी ऐसी है क्योंकि नेचुरल योगी की, जिसके साथ योग है उन जैसी नेचर हो जाती है। जिसके साथ सम्बन्ध होगा, जिसके संग में रहेगा उसका रंग लग जायेगा।

बी होली बी राजयोगी, होली फर्स्ट, पवित्रता से जो योगी है उसमें अपवित्रता की अंश भी नहीं है। थोड़ी भी अपवित्रता बड़ी दुश्मन है, थोड़ा भी व्यर्थ ख्याल शुद्ध आत्मा बनने नहीं देगा। पुरुषार्थ में मैं शुद्ध आत्मा हूँ, मन शान्त तभी होता है जब बुद्धि स्थिर है। आज किसी ने पूछा स्मृति क्या होती है? अन्तिम घड़ी की स्मृति में एक बाबा और कुछ न हो उसके लिए क्या पुरुषार्थ है? मन शान्त बुद्धि शुद्ध कोई भी हलचल न हो। मानो हलचल हो रही है पर हमारी अचल अडोल स्थिति हलचल को बन्द कर देती है। महाविनाश के पहले ऐसी-ऐसी बातें होंगी, दृश्य होंगे लेकिन हमें डरना नहीं है। जो बहुतकाल से निडर स्थिति में रहे हैं उनको सामना करने में डर नहीं लगेगा।

शिवबाबा ऐसी फीलिंग देता है जो सबको बाबा की याद आ जाये, इतना खींचता है, बैठा है वहाँ। बाबा के कमरे में जाओ तो ऐसे लगता जैसे बाबा मेरे को देख रहा है। वही खटिया, वही गद्दी उसमें जो सुख पाया है, वो सारा स्मृति में आ गया। अगर इसके अलावा कोई भी बात याद आई, तो बाबा की याद नहीं आयेगी फिर बाबा मुझे याद नहीं करेगा। अगर सूक्ष्म में मैं कोई बात याद करेंगी तो बाबा याद नहीं आयेगा। अगर बाबा मुझे याद नहीं आयेगा तो बाबा मुझे क्यों याद करेगा? एक याद अक्षर उसकी गहराई में जाओ, बाबा बड़ा अच्छा है।

करनहार करता ऐसा है, जो कराने में बड़ा होशियार है। एक बाबा को करनकरावनहार के रूप में याद करो। करनहार फिर करावनहार। हम नहीं कर सकते, करावनहार करा रहा है, ऐसा मेरा बाबा है। धन से सेवा कराने का भी अक्ल चाहिए, ऐसे ही किसको कहो तुम यह करो, तो वो नहीं मानेगा। यज्ञ के सारे भण्डारे कैसे चलते हैं? मिल करके करते हैं। यह नियम कहो या वरदान कहो, कहाँ पर भी रहते पहले यज्ञ सेवा किया, कराया है, मेरे पास धन है नहीं, पर किसका सफल कैसे कराया जाये, यह भी अक्ल चाहिए। सफल करना और कराना, उसके लिए पहले अपना समय सफल करो। मन-वाणी-कर्म श्रेष्ठ है तो सफल है, तो भण्डारे की भण्डारी भरपूर रहेगी। अच्छा।

27-10-14

"बाबा में मेरापन लाओ तो मेरे की याद कभी भूल नहीं सकती"

(दादी गुल्जार)

सबके नयनों में कौन है? मेरा बाबा। मेरा बाबा कहने से नशा चढ़ता है। मेरा मीठा बाबा, प्यारा बाबा पहले मेरा है। मेरा कभी भूलता नहीं। मेरा कहने से चलते-फिरते याद रहेगा। बाबा तो सारे विश्व का है लेकिन पर्सनल मेरा है इसलिए बाबा कहते हैं मेरापन लाओ बाबा में तो स्वत: ही याद रहेगा। हम तो हैं ही सरेण्डर, बाबा में ही सारा संसार है इसलिए हमारे लिए सहज है। भले सेवा में बिजी रहते हैं, मुरली सुनते वा सुनाते हैं लेकिन मुरली की शुरूआत बाबा और बच्चों से होती है। मुरली सुने बिगर चैन नहीं आता। सारा दिन मुरली का ही चिंतन चलता है। टीचर्स तो हैं ही इसी धन्धे के लिए, मुरली सुनना और सुनाना। मुरली किसकी है वह भूलेगा नहीं।

बाबा कहते हैं देह को भूलो लेकिन फिर भी याद रहता है क्योंकि मेरा है, ऐसे बाबा भी कभी न भूले। बातें तो आती

हैं लेकिन बाबा न भूले इसी प्वाइन्ट पर नम्बर मिलते हैं। कर्म करते कितना समय बाबा को याद किया यह चेक करो, यह सेवा किसने दी है? बाबा ने। यह याद रहे तो भूल नहीं सकता। जैसे कोई अच्छा खाना बनाता है तो बनाने वाले की याद रहती है, वैसे ही सेवा बाबा की है, बाबा ने दी है, यह याद रहे तो बाबा भूल नहीं सकता। अभी दिल्ली वालों को डबल सेवा करनी है, यह जिम्मेवारी टीचर्स की है। हमें दिल्ली को तैयार करना है, राज्य करने के लिए। तो कुछ तो ड्यूटी लेंगे ना। हमारे कितने भाई-बहनें आते हैं दिल्ली में, खुशी है ना। दिल्ली में ही सबको आना है। भविष्य में राजधानी दिल्ली ही होगी इसलिए हमें दिल्ली को सजाना है। पहले चैतन्य फूलों को (स्टूडेन्ट्स) सजाना है। दिल्ली में सबसे पहले सबकी नज़र विद्यार्थियों पर जाती है। दिल्ली को हम ऐसा तैयार करें जो दिल्ली निर्विघ्न बन जाए। बाबा चार्ट देखे तो दिल्ली का चार्ट निर्विघ्न हो। हमारी अवस्था ऐसी हो जो बाबा नेचुरल याद रहे। हमारा कर्म उसी प्रमाण हो जैसा हमें बाबा ने सिखाया है। बाबा के याद आने से सबकुछ याद आ जाता है। निर्विघ्न रहने के लिए टीचर्स अपने पर अटेन्शन रखें। अमृतवेले उठकर अपनी चेकिंग करो कि मेरे में क्या कमी है फिर उसी प्वाइन्ट पर सिमरण कर उसे समाप्त करो। कारण का निवारण करो और देखो मैं इस कमजोरी को खत्म करने में सफल रही। दिल्ली में रहने वालों की विशेष जिम्मेवारी है क्योंकि सब हमारे पास राज्य करने आयेंगे। हम निमित्त हैं, हमने सबको दिल्ली में आने का निमंत्रण दिया है। निमित्त पर सबका ध्यान जाता है। बाबा कहते ऐसा बनो जो राजधानी में पहले आओ, पहले तो मम्मा बाबा का राज्य होगा लेकिन उनके साथ हम भी आयेंगे इसलिए दिल्ली को अच्छी तरह सजाओ। आपको दिल्ली में सभी देवी-देवताओं का आह्वान करना है। पहले खुद बनना है तभी दूसरों का स्वागत कर सकेंगे। दिल्ली विश्व का आधार है, हम ही बनाने वाले हैं। सदा खुशी में भी रहना है और निर्विघ्न भी रहना है। जितना हो सके यहाँ ही सबको सन्तुष्ट करना है। हम देने वाले दाता है, दे तभी सकेंगे जब स्वयं अन्दर से भरपूर होंगे। जितना हम खुश होंगे हमें देख सब खुश होंगे। अच्छा।

28-10-14

"जीवन की शोभा - पवित्रता"

(टीचर्स बहनों के साथ गुल्जार दादी)

आज आप सेवा कर रहे हो और कल राज्य करेंगे। आपके भविष्य का सीन नयनों में घूम रहा है। वैसे तो हमने अनेक बार राज्य किया है, अभी तो सिर्फ रिपीट करना है। आप यहाँ क्यों आये हो? क्योंकि आपके दिन चल रहे हैं। (नवरात्रि के दिन) भक्त हमारे सतयुगी देवी-देवताओं के रूप को यादगार बनाकर पूजन कर रहे हैं। पवित्रता का ही पूजन होता है। पवित्रता ही जीवन की शोभा है। आप सभी सेवाधारी टीचर्स को बाबा आज लाख-लाख बधाइयाँ दे रहे हैं और खुश हो रहे हैं अपने सेवाधारी साथियों को देख। देखो, बाबा का जन्म भी सेवा के लिए होता है। आज बाबा साकार में तो नहीं है लेकिन एक एक को सूक्ष्मवतन में इमर्ज कर बहुत प्यार कर रहे हैं। आपने अपनी जीवन सेवा के लिए बिताई है, बाबा आप शिव शक्तियों को सेवा की मुबारक दे रहे हैं। एक एक टीचर्स को देख बाबा कैसे खुश होता है, बात मत पूछो। हमने साकार बाबा को देखा बच्चियों की सेवाओं का समाचार सुन बाबा बहुत खुश होते थे, कहते थे कमाल है फलानी बच्ची की। तो बाबा आपको सूक्ष्मवतन में इमर्ज करके वाह-वाह के गीत गा रहा है कि कुमारियों ने हिम्मत रखी। हम सबको दिल्ली को स्वर्ग बनाना है यह तो गैरन्टी है। स्वर्ग की स्थापना करने वाली कुमारियाँ, माता या भाईयों को बाबा आज सेवा की करोड़ों मुबारकें दे रहे हैं। टीचर्स को सिर्फ वाणी की सेवा ही नहीं करनी है बल्कि

अमृतवेले उठ भक्तों को सकाश देना है। आप तो बाबा से सीधा मिल लेते हैं लेकिन जो नहीं मिल पाते उन्हें प्राप्ति करानी है। भक्त भी कम नहीं, आज बाबा विशेष भक्तों को यादप्यार दे रहे हैं। टीचर्स को, सभी को दिल का सहारा देना है, चाहे ज्ञान में चलने वाले हो या भक्त दोनों। एक दूसरे को मुबारक देते। अब विघ्नों को खत्म करो, मुबारक देना माना दुआयें देना। बाबा के प्यार का रिटर्न सेवा है, बाबा इस विश्व की ऐसी सेवा चाहते हैं जो पुरानी विश्व बदलकर नई हो जाये। संस्कार मिलाने के लिए जो ज्ञान योग और धारणा की क्लास होती है उस पर ध्यान दो। अमृतवेले सारी कमी कमजोरी बाबा को दे दो और उसे खत्म करने की बाबा से प्रॉमिस करो। बाबा अमृतवेले दृष्टि देता है, वही हमारे लिए दुआएं और प्यार है, उसे अमृतवेले स्वीकार करो। अमृतवेला नींद या व्यर्थ संकल्पों में न जाए। बाबा हमें दे रहा है और हम कुछ और सोच रहे हैं। बाबा से वरदान के समय वरदान लो और बातों के चिंतन में न जाओ। अमृतवेला लेने का समय है, पुकार में समय नहीं गंवाओ। कईयों को अमृतवेले अनुभव भी होता है कि बाबा दुआएं बांट रहा है, दुआयें लेना हमारा काम है। अमृतवेले जागृत अवस्था में वरदान लेंगे तो पुरुषार्थ सहज हो जायेगा। संस्कार मिटाने की कोशिश नहीं करनी पड़ेगी। टीचर्स अपने को और अपनी क्लास को नम्बरवन करेंगी तो दिल्ली का नाम बाला होगा। टीचर्स अपनी-अपनी सेवा अच्छी कर रही हैं, सेन्टर्स अच्छे चल रहे हैं लेकिन क्लास को आगे बढ़ाओ। अन्दर के तीव्र पुरुषार्थ का टीचर्स को ओना रखना है। जो भी है वह कायदेमुजीब करो, बार-बार पूछो नहीं। कायदे पर चलो ताकि कभी कोई रिपोर्ट न मिले। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

हर एक अपना-अपना चार्ट चेक करो कि

1) हम पक्के ट्रष्टी हैं?
2) बुद्धि में यह पक्का है कि यह प्रवृत्ति या परिवार मेरा नहीं परन्तु बाबा का है? हम कर्मबन्धन के कारण परिवार के पीछे निमित्त हैं परन्तु मेरा परिवार नहीं बाबा का है।
3) मेरी बुद्धि सम्पूर्ण सरेण्डर है? बुद्धि एक दो में अटैच तो नहीं है?

कई बार माताओं की बच्चों में बहुत ममता रहती इसलिए पति को भी आंख दिखाती कि बाबा ने ऐसा थोड़ेही कहा है कि बच्चों का ध्यान नहीं रखो। ऐसा ज्ञान थोड़ेही दिया है। इसके कारण आपस में दो मतें बन जाती हैं। दो मतों के कारण एक दो में मीठा-मीठा झगड़ा शुरू होता इसलिए बैलेन्स से चलना सीखो। माँ बाप का बच्चों पर भी पूरा अटेन्शन चाहिए। प्रवृत्ति वालों को बाबा हमेशा कहते - अगर तुम्हें अपना व्यवहार चलाना आता है तो तुम बाबा का भी व्यवहार चला सकते। व्यवहार चलाना माना यह नहीं कि बाबा के व्यवहार से बुद्धि हटा लें। व्यवहार और परमार्थ दोनों का बैलन्स हो।

बाबा ने हम सबको जो भी ईश्वरीय मर्यादायें बताई हैं, खुद से पूछो- मैं उन ईश्वरीय मर्यादाओं में बंधा हुआ हूँ? आप सब कितने लक्की हो। आपके पास दो की इकट्ठी शक्ति है, आप शिव शक्ति पाण्डव सेना हो। कुमार-कुमारी तो अलग-अलग शक्ति है। आप दो इकट्ठी शक्ति हो। आप डबल काम कर सकते हो। आप सबके आगे ढ़ाल है शक्ति। शक्ति का केयर-टेकर है पाण्डव। दोनों का साथ है। आप कोई भी कार्य डबल शक्ति से कर सकते हो इसलिए पहले तो यह पक्का समझो कि यह शिव शक्ति है और वह समझे यह पाण्डव है। लेकिन जब यह आता कि यह मेरी है, यह मेरा है, तो शिव शक्ति खत्म हो जाती। मेरा, मेरी की अटैचमेंन्ट आती तो दुनिया ही बदल जाती है। व्यक्त दुनिया का भाव पैदा हो जाता है। लेकिन शिव शक्ति पाण्डव हूँ माना वह जगत माता है, वह जगत पिता है। बाबा ने यह भी

मन्त्र दिया है तू अकेले आये, अकेले जाना है, युगल होकर नहीं इसलिए हम दोनों का एक है। वह भी कहती मेरा बाबा, वह भी कहता मेरा बाबा, इसलिए तू मेरा, तू मेरी यह नाता खलास। यह ईश्वरीय मर्यादा प्रवृत्ति वालों के लिए भी निरन्तर है। जब ऐसी मर्यादा के अन्दर रहो तब कहेंगे तपस्वी कुमार, तपस्वी कुमारी का कंगन बांधा है। जो भी अन्दर में पुरानी वृत्तियां उठती हैं वह सब खत्म हो जानी चाहिए। याद रखो ऐसे समय में हम सन्यासी हैं, तपस्वी हैं। हम गृहस्थी नहीं, ट्रस्टी हैं। हम एक बाप के बच्चे आत्मा भाई-भाई हैं, भाई बहन हैं। अगर फिर भी वृत्ति नहीं बदलती तो सदैव देखो वन्दे मातरम्। यह जगत माता है। हमारे घर में जगत माता, दुर्गा देवी है। जब ऐसा दोनों हरेक अपने को समझ लें तो अम्बा समझेगी मैंने अपने पांव के नीचे असुर संहार किया। फिर अगर वृत्ति जायेगी तो उसे समाप्त कर देगी, न कि उत्तेजित होगी। एक का संकल्प उठे तो दूसरा उसे योगदान दे। उसकी वृत्ति को खत्म करे, इसी का नाम है पर-वृत्ति। जब ऐसा सभी नियमों का कंगन बांधों तब बच्चे भी समझेंगे हमारे योगी मां बाप तपस्वी हैं।

बुद्धि में सदा यही रहे कि मैं अकेला हूँ, तू अकेली हो। तुम्हें भी तपस्या में रहना है, हमें भी रहना है। इससे मंसा की अपवित्र वृत्ति समाप्त हो जायेगी। सबसे पहला हमारा मंत्र है- बी होली-बी योगी। तो हरेक अपने से पूछे हम परिवार में ऐसे रहते हैं। एक बाबा दूसरा न कोई।

एक दिन बाबा ने कहा बच्चे तुम्हें कभी यह अनुभव होता है कि मेरे भक्त मुझे पुकार रहे हैं और मैं साक्षात्कार मूर्त बन साक्षात्कार कराने जा रही हूँ? इसमें बाबा के कहने का भाव यही है कि बच्चें तुम्हें देवी वा देवता रूप में, साक्षात्कार मूर्त होकर रहना है, हम भक्तों को साक्षात्कार कराने वाली मूर्त हैं। जब सदैव अपने को मूर्त समझेंगे और एक दो को ऐसी ही दृष्टि देंगे, लेंगे तो देखेंगे कि प्रवृत्ति में हम कम्बाइन्ड लक्ष्मी-नारायण की जोड़ी हैं। सदैव एक दो को देखो यह श्रीनारायण है, हम श्री लक्ष्मी हैं परन्तु ऐसे नहीं हम ही भविष्य में फिर जाकर जोड़ी बनें। दो को बाबा ने सेम्पुल इसलिए बनाया है कि आप हरेक चर्तुभुज हो, चारों अलंकार शंक, चक्र, गदा, पद्म साथ रहें। इन चार अलंकारों के बीच बाबा ने जो चार सेवाएं दी हैं, उन चारों सेवाओं को आप अपनी भुजाओं में सहज ले सकते हो। अपना सदैव लाइट का चक्र चलता रहे, मुरलीधर की मुरली बजाते रहो अर्थात् शंक बजता रहे। ज्ञान की गदा से विकारों को समाप्त करो तो पद्म समान बन जायेंगे। यह प्रवृत्ति का सैम्पुल है, अलंकार वाली प्रवृत्ति हो मेरी तेरी नहीं। ऐसे अलंकारधारी रहेंगे तो प्रेम और शान्ति रहेगी।

कई बार प्रेम में अटैचमेन्ट हो जाती है। कई कहते हैं प्रेम से तो रहना है ना। फिर प्यार में आ जाती है मोह ममता। यह भी गुप्त माया है। प्यार से रहना है यह तो समझा, परन्तु प्यार में ममता है इस माया को नहीं समझा। बाबा ने कहा है प्रेम से रहो माना संस्कारों का टक्कर न हो। विचारों में जब अन्तर होता है तो मन्त्र होता है टक्कर। जब आप दोनों साथ-साथ चलते तो श्रीमत को सदा सामने रखो। घर का वातावरण शान्त परन्तु कई बार घर में अशान्ति हो इसके लिए समझते पति की जो मत है वही श्रीमत है। हम उस पर चलेंगी तो शान्ति रहेगी। वह समझते श्रीमती की ही श्रीमत है। कहते क्या करें, न चलें तो आंख दिखायेगी। लेकिन श्रीमत है हमारी मुरली। मुरली में बाबा ने जो डायरेक्शन दिये हैं उसके अनुसार हमारा कदम है तो पदम हैं इसके लिए स्नेह से भले रहें परन्तु न्यारे।

आपस में दो साथ रहते तो कभी-कभी एक दूसरे को दिल का हाल चाल सुनाते, दूसरों की बात साथी को सुनाते। एक दो की बातें सुनते-सुनते परचिन्तन का चक्र चलने लगता। बाबा ने आपको इसीलिए प्रवृत्ति नहीं दी है कि बातों का चक्र रिपीट करो। अगर एक की कमी दूसरे को सुनाई तो उसमें भी कमी का भाव भर दिया। उसके अन्दर भी नफरत का भाव आ जाता। जोड़ी इसलिए नहीं है कि दिल का, तेरे-मेरे का, वायुमण्डल का चिन्तन करो, इसीलिए बाबा ने मन्त्र दिया है - शुभ चिन्तन में रहो, शुभचिन्तन करो। कभी भी परचिन्तन का चक्र आपस में नहीं चलाओ। दिलवाला तो एक बाबा है उसे दिल दो। आपस में नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।